माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 2017

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड			परीक्षा का माध्यम
भारतीय संगीत	1	6	1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

[redacted]

सरल क्रमांक

अंकों में — परीक्षार्थी का रोल नम्बर

0	2	7	3	1	9	9	0	0	8

शब्दों में

0	दो	सात	तीन	एक	नौ	नौ	शून्य	शून्य	आठ

[redacted]

नीचे दिये गये उदाहरण के अनुसार रोल नम्बर भरें

[redacted]

क - पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में X शब्दों में X

ख - परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 09

ग - परीक्षा का दिनांक 08 03 2017

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकण्डरी परीक्षा C.N. 311082

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक शब्दों में	कुल प्राप्तांक अंकों में

(2) योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 2 के अंक — कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

खण्ड 'अ' गायन एवं वादन

उत्तर 1

(i) चार
(ii) चार
(iii) दो
(iv) बाईस 22
(v) काफी

उत्तर 2.

(i) गुण — स्पर्श स्वर
(ii) रात्रि के बारह से दिन बारह बजे तक — पूर्वराग
(iii) संकीर्ण — दो या अधिक रागों से मिश्रित
(iv) तान — द्रुतगति से स्वर-विस्तार क्रिया
(v) दिन के बारह से रात्रि के बारह बजे तक — उत्तरराग

उत्तर 3.

(i) असत्य
(ii) सत्य
(iii) असत्य
(iv) असत्य
(v) सत्य

BSE

DARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOAR

न क्र.

उत्तर 4.

राग. विहाग.

आरोह. ऩि सा ग. म प. नी. सां. ।
अवरोह. सां नी ध प. म प ग म ग. सा. ।

उत्तर 5.

राग-भैरवी.

वादी. मध्यम म
सम्वादी. सा षड्ज

उत्तर 6.

लक्षण गीत- लक्षण गीत वह होता है जिसमें राग के लक्षण (पकड़) वादी. सम्वादी विवादी. वर्ज्य. राग के गाने का समय तथा अन्य रागों से बचना इत्यादि विषय लेकर किसी ताल में निबद्ध करना लक्षण गीत कहलाता है। यह सभी रागों में प्रायः गाया जाता है। इसे प्रारंभिक कक्षा के छात्रों के लिए तैयार किया जाता है। इसे मंच या सभाओं नही गाया जाता है।

B S E

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAP

श्न क्र.

उत्तर 7.

आधुनिक पद्धति से श्रुतियों पर स्वरों की स्थापना =

चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्जमध्यमपञ्चमा: ।
द्वि द्वि निषाद गांधारो त्रिस्त्री रिषभ धैवतो ।।

षड्ज मध्यम पंचम स्वरों की 4-4 श्रुतियां, निषाद गंधार स्वरों की 2-2 श्रुतियां तथा रिषभ धैवत की 3-3 श्रुतियां होती है इस प्रकार कुल मिलाकर 22 श्रुतियां होती है।
आधुनिक पद्धति के अनुसार प्रत्येक स्वर को उसकी प्रथम श्रुति पर स्थापित करते हैं।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
↓ सा				↓ रे			↓ ग		↓ म			

14	15	16	17	18	19	20	21	22
↓ प				↓ ध			↓ नी	

B
S
E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

उत्तर 8

ताल- तीव्रा

इसमें पहली मात्रा पर सम (X) भी तथा खाली (o) माना जाता है

मात्रा- 7, विभाग- तीन, ताली- 1, 4, 6 पर

ठेका- धा दिं ता | तिट कत | गदि गन
X 2 3

दुगुन लय = धादिं तातिट कतगदि | गनधा दिंता | तिटकत गदिगन
X 2 3

उत्तर 9

जीवन परिचय- संगीत स्वामी हरिदास

इनको जन्म के विषय में बहुत मतभेद है फिर अनुमानतः विद्वानों का मत है कि इनका जन्म 1537 में हुआ था। उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के राजपुर नामक गाँव में शास्वत ब्राह्मण पिता आशुधीर तथा माता गंगादेवी के गर्भ से इनका प्रादुर्भाव हुआ था ये जन्म से ही विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न थे। अतः इनका मन बाल्यकाल से ही संगीत साधना तथा भगवत भक्ति में लग गया। इनके पूज्य पिता जी भी बहुत बड़े संगीतकार थे इसलिए इनको भी संगीत इनके पिता जी से ही प्राप्त हुआ इनका विवाह अल्पायु में ही हो गया लेकिन ये गृहस्थ जीवन को ज्यादा दिनों तक व्यतीत नहीं किया

प्रश्न क्र.

इसलिए संगीत साधना के लिए ये वृन्दावन के निकुञ्ज वन में पहुंचे। वहाँ पर इन्होंने संगीत की घोर साधना करके संगीत के द्वारा ही भगवान श्री कृष्ण की ~~साकार~~ साक्षात प्रतिमा को प्रकट किया और इस प्रकार इन्होंने ब्रह्म का साक्षात्कार किया इसलिए इनको नाद ब्रह्म योगी कहा जाता है।

स्वामी जी के कई शिष्य थे परन्तु इनके मुख्य शिष्य संगीत सम्राट तानसेन थे। इस संसार में ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो तानसेन को न जानता हो। तानसेन बादशाह अकबर के दरबार में नवरत्नों में एक थे। तानसेन स्वामी हरिदास जी के बारे में रोज बताते तथा उनकी प्रशंसा करते थे एक दिन बादशाह अकबर ने स्वामी हरिदास जी का गायन सुनने की जिद की तानसेन तथा बादशाह अकेले ही स्वामी जी की कुटिया पर पहुंचे अकबर झाड़ी के पीछे छुप गए तथा तानसेन कुटिया पर और स्वामी जी को प्रणाम किया। वहाँ तानसेन गुरु जी के सामने अशुद्ध ध्रुपद गाने लगा तब स्वामी जी ने तानसेन को डांटा तथा उस ध्रुपद का शुद्ध रूप सुनाया अकबर स्वामी जी का गायन सुनकर भावविभोर हो गए तथा उनके चरणों में गिर पड़े।

कुछ लोग स्वामी जी को ललितावती का अवतार मानते हैं इन प्रकार साधना करते हुए स्वामी ब्रह्मलीन हो गए लेकिन हमलोगो की आत्मा

B
S
E

DARYEDUCATION MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESHBHOPALBOARD

न क्र.

में आज भी जिन्दा है। इनकी शिष्य परंपरा आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत की सेवा में अभ्यासरत है।

उत्तर 10.

तानपुरा.

परिचय.

तानपुरे की उत्पत्ति सरस्वती माँ की वीणा से हुयी है। कुछ लोग इसका अविष्कार शिव जी को भी मानते हैं। तानपुरे में चार तार होते हैं। जिसमें तीन तार षड्ज के तथा एक तार पंचम की. इसको थोड़ा उतार कर मध्यम से मिलाते हैं। तानपुरे का स्वर इतना मधुर होता है कि इसके स्वर को सुनते ही सामने वाला गाने के लिए मचल उठता है।

B
S
E

तानपुरे के अंग-

(1) तुम्बा
(2) तबली
(3) ब्रज
(4) धागा
(5) कील मोगरा
(6) लंगोटा
(7) पत्तिया
(8) डाण्ड
(9) गुल
(10) अटिया अटाव
(11) तार गहन
(12) खुटियाँ

⑧ [ ] + [—] = [—]

पृष्ठ 8 के अंक   कुल अंक

मध्यप्रदेश

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPR

प्रश्न क्र.

(i) तुंबा- यह गोल लौकी का कटा हुआ भाग होता है। जो डाण्ड के नीचे जुड़ा होता है। वह तुंबा होता है।

(ii) तबली= गोल लौकी के कटे हुए भाग के ऊपर का भाग काट कर उसको एक लकड़ी के टुकड़े से ढक दिया जाता है। उसे तबली कहते है।

(iii) ~~वज्र =~~ इसे घुड़ज अथवा घोड़ी कहते है। यह डाण्ड के ऊपर स्थित होता है। यह लकड़ी तथा हड्डी की चौकी के आकार की बनी होती है। इसे ब्रज कहते है।

(iv) धागा= इसे तुम्बा तथा डाण्ड पर बाँध देते है। जिससे तानपूरे के झंकार में वृद्धि होती है इसे धागा कहते है।

(v) कीलमोगरा एवं लंगोट = डाण्ड के नीचे एक खूंटी होती है जिसमें तारों को बाँधा जाता है, उसे कीलमोगरा तथा लंगोट कहते है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

(vi) पत्तियाँ ⇒ तानपुरे की शोभा बढ़ाने के लिए तथा उसका श्रृंगार करने के लिए जो लकड़ी की ~~पत~~ पतली-2 टुकड़ियां लगाई जाती है उसे पत्तियां कहते है।

(vii) डाण्ड ⇒ डाण्ड एक खोखली लकड़ी का बना होता है जिसमे खूटियां लगी होती है उसे डाण्ड कहते है।

(viii) गुल ⇒ जहाँ पर तुम्बा और डाण्ड का मेल होता है उसे गुल कहते है।

(IX) अटि या अटाक = तुम्बा से डाण्ड तक जो तार जाते है उनको जहां पर स्थापित किया जाता है उसे अटि या अटाक कहते है।

(X) तारगहन या तारदान ⇒ तुम्बा से ऊपर डाण्ड तक तार जाते है जहा पर कई ~~छ~~ छिद्र मिलते हैं। जिनसे ऊपर होकर तार जाते है उसे तारगहन कहते है।

(XI) खूटियाँ ⇒ तुम्बा में लगे हुए डाण्ड में चार खूटियां होती है। जिसमे तार बंधे होते है उन्हे खूटियां कहते है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

उत्तर 11

(iii) मानव जीवन में संगीत की आवश्यकता

मानव जीवन से संगीत का रिश्ता प्राचीन काल से चला आ रहा है। संगीत माध्यम से ही लोक अपने मानसिक तथा शारीरिक तनाव को दूर करते हैं। जिस समय वाद्य यंत्रों का आविष्कार नहीं हुआ था उस लोग ~~पशुओं और वस्तुओं के माध्यम से~~ मनोरंजन तथा थकाव दूर करते थे। इसका चार वेदों में प्रमुख वेद सामवेद में वर्णन सांगोपांग प्राप्त होता है। संगीत बालक के जन्म समय से मृत्यु पर्यन्त जुड़ा हुआ होता है। बालक के जन्म उत्सव को मनाने के लिए तथा माहौल को खुशहाल बनाने के लिए संगीत का प्रयोग किया जाता है। बालक की शादी पर भी मनोरंजन करने के लिए संगीत की उपयोगिता है। जब व्यक्ति का देहावसान होता है तब उसके अन्त्येष्टि संस्कार करने के लिए संगीत उपयोगी है। संगीत का प्रयोग लोक मनोरंजन के लिए करते हैं। हमें इसका ~~प्रयोग~~ मनोरंजन के लिए प्रयोग न करके साधना तथा भगवत भक्ति के लिए उपयोग करें। संगीत के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है।

B
S
E